

चिड़ियाघर की सैर

Chidiya Ghar Ki Sair

निबंध नंबर :- 01

प्रस्तावना- दिल्ली में अनेक दर्शनीय स्थल हैं जिनमें से चिड़ियाघर भी एक है। यह वह स्थान है जहां भिन्न-भिन्न प्रकार के पशु-पक्षी होते हैं। इन्हें देखने के लिए दूर-दूर से पर्यटक आते हैं। बच्चे इन्हें देखकर बहुत आनन्दित होते हैं।

चिड़ियाघर का क्षेत्र- चिड़ियाघर नई दिल्ली में पुराने किले के समीप एक बहुत बड़े भूखण्ड पर फैला हुआ है। इसे देखने के लिए बहुत अधिक समय लगता है।

गर्मियों की छुट्टियों में मैंने अपने मित्रों एवं परिजनों के सामने एक साथ चिड़ियाघर देखने का प्रस्ताव रखा। उन्होंने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और हम सब रविवार को चिड़ियाघर देखने चल दिये। वहां पहुंचकर हमने टिकट लिये।

हमारा प्रवेश- टिकट लेकर जब हम चिड़ियाघर के मुख्य द्वार से अन्दर प्रविष्ट हुए तो हमने मार्ग के दोनों ओर हरी-हरी घास तथा फूलों के पौधे देखे। इसके बाद पानी में तैरती हुई बत्खें, सारसों तथा बगुलों व एक झील में मगरमच्छ तथा दूसरी जगह पानी में गैंडा देखकर हम बहुत खुश हुए।

इसके अतिरिक्त अनेक प्रकार की चिड़ियों एवं तोतों को देखा। आगे चलकर हमने बारहसिंहों एवं हिरणों को इधर-उधर दौड़ते हुए देखा।

व्यक्तिगत अनुभव- आगे जालीदार बाड़ों में वानरो और लंगूरों की अनेक जातियां देखने को मिलीं। मैंने उनको अपने हाथों से चने व मूंगफली खिलायीं। यहां सफेद बन्दर भी थे जिनके मुंह काले और पूंछ लम्बी थी।

उसके कुछ आगे कटघरे बने हुए थे जिनमें शेर, चीते, बाघ और भालू स्वतन्त्रता से घूमते-फिरते हैं। उनके आगे ऊंचे जालीदार बाड़े बने थे जिससे वे हम तक नहीं पहुंच सकते थे। इन हिंसक जानवरों को देखकर बहुत खुश हुआ।

उपसंहार- केवल चिड़ियाघर ही एक मात्र स्थान है जहां हम अपनी आंखों से प्रत्यक्ष रूप से संसार के दुर्लभ जाति के अनेक जीव-जन्तुओं को देख सकते हैं।

चिड़ियाघर को देखकर जहां एक ओर हमें मनोरंजन की प्राप्ति होती है वहीं दूसरी ओर इससे हमारे ज्ञान में भी वृद्धि होती है।

निबंध नंबर :- 02

चिड़ियाघर की सैर

Chidiyaghar ki Sair

चिड़ियाघर वह स्थान है जहां जानवरों तथा पक्षियों को रखा जाता है। यह बच्चों के लिए जानकारी का स्थान है। चिड़ियाघर का भ्रमण बहुत जानकारी प्रदान करने वाला होता है। हमें इस प्रकार के वातावरण का पता चलता है जहां ये जीव रहते हैं। हम उनकी हरकतों को देख सकते हैं।

मैं भी एक बार नई दिल्ली के एक चिड़ियाघर में गया। वह एक बहुत बड़ा चिड़ियाघर था। मैं वहां अपने दोस्तों के साथ गया। हमने टिकटें खरीदीं और अन्दर चले गये। हमने कई प्रकार की चीजें देखीं। सभी प्रकार के जानवर पिंजरों में बंद थे। शुरू में हर अजगर देखे। वहां रंग-बिरंगे तोते, मोर तथा कबूतर देखे। फिर हमने बत्तखें देखीं। वहाँ हिरण, दरियाई घोड़ा तथा जिराफ भी थे। ये असहाय जानवर उदास नज़र आ रहे थे।

चिड़ियाघर के बीचों-बीच एक तालाब था। हमने एक बहुत बड़ा हिप्पो देखा। वह दैत्य समान लगता था। फिर भेड़िए, भालू तथा शेरों ने हमारा ध्यान आकर्षित किया। वह पत्थर से बने पिंजरों में रखे हुए थे। शेरों को पानी के गहरे तालाबों के पीछे रखा हुआ था। फिर हम बन्दरों को देखने चले गए। बन्दरों ने हमें अपनी हरकतों से मनोरंजित किया। चिड़ियाघर का सबसे प्रभावशाली जानवर सफेद हाथी था।

चिड़ियाघर के अंदर एक कंटीन भी थी। जब हम थक गए तो हमने वहां से चार बिस्कुट खाए। चिड़ियाघर अच्छे तरीके से संभाला हुआ था। सभी जानवरों तथा पक्षियों की सही अच्छा आहार दिया जाता है। कई जानवर तथा पक्षी पिंजरों में उदास प्रतीत होते थे। वे आजाद होना चाहते थे। किन्तु उन्हें ऐसे ही अपना जीवन व्यतीत करना था। उनके उदास चेहरों ने हमें बहुत दुःखी किया।

निबंध नंबर :- 03

चिड़ियाघर की सैर Chidiya Ghar ki Sair

कर्म करना मनुष्य का धर्म है, परन्तु कर्म करते-करते जब मनुष्य थक जाता है तो वह परिवर्तन चाहता है। वह दिल-दिमाग हल्का करना चाहता है। इस के लिए वह मनोरंजन के साधन ढूंढता है। कभी वह बाग की सैर को निकल जाता है तो कभी सिनेमा, सर्कस देखने या चिड़ियाघर की सैर करने निकल जाता है।

मुझे घूमना बहुत अच्छा लगता है। मेरा जानवरों के प्रति भी बहुत प्यार है। हमारे शहर में एक बहुत बड़ा चिड़ियाघर है। मेरा बार-बार मन चाहता है कि चिड़ियाघर की सैर करूँ और पशु-पक्षियों को देखूँ, उनसे मित्रता करूँ। इन सुन्दर प्राणियों के देखकर मुझे आनन्द आता है।

पिछले रविवार मेरे मामा जी अपने बच्चों को लेकर हमारे घर आए। हल्की-हल्की, ठण्डी-ठण्डी हवा चल रही थी। मौसम बड़ा सुहावना था। हम सबने चिड़ियाघर की सैर का कार्यक्रम बनाया। मैं अपने माता-पिता की अनुमति लेकर उनके साथ चिड़ियाघर देखने चला गया। दस मिन्ट में हम सब वहां पहुंच गए। वहां मुख्य द्वार से हमने टिकट ली तथा अन्दर चल दिए। वहां तरह-तरह के जानवर थे। हम एक कोने से जानवर देखने शुरू हो गए।

सबसे पहले हमने पानी में तैर रहे ऊदबिलाव देखे। यह समुद्रों में बहुत पाये जाते हैं। यह पानी में भी चले जाते हैं और पानी के बाहर रेतली मैदान में भी रेंगते हैं। ये काले रंग के जानवर मच्छलियां खाकर अपनी भूख मिटाते हैं। यहां पानी कम था, मच्छलियां भी कम थी इसलिए ऊदबिलाव कमजोर से दिखाई दे रहे थे। हम यहां ज्यादा देर न ठहर सके, क्योंकि पानी न बदलने के कारण वहां से गंदी बदबू आ रही थी। हम थोड़ा आगे गए तो हमने अलग-अलग पिंजरों में बन्द तीन बड़े भालू देखे। ये भालू काले तथा भरे रंग के थे। ये अपने पिंजरों को जोर-जोर से हिला रहे थे। जानवर भी आज्ञादी चाहते हैं परन्तु मनुष्य अपनी ज़रूरतें पूरी करने के लिए और मनोरंजन के लिए उन्हें बन्दी बनाकर रखता है। मुझे जानवरों की इस स्थिति पर बड़ी दया आई।

कुछ और आगे जाने पर बहुत बड़ा खुला मैदान देखा जिसे जंगल का रूप दिया गया था। वही घनी झाड़ियां, वृक्ष लगे हुए थे। तभी हमें वहां से शेर की गुराहट सुनाई दी। हम थोड़े से डर गए। लगता

था जैसे आस-पास कहीं शेर है। इसी समय हमें शेर दिखाई दिया तो हमें पता चला कि हम शेर की गुफा तक आ पहुंचे हैं। शेर और शेरनी अपने दो छोटे-छोटे बच्चों के साथ खेल रहे बड़े सुन्दर लग रहे थे। शेर हल्के बादामी रंग का था और उसके शरीर पर गहरे भूरे रंग की धारियां थीं। जानवर भी एक दूसरे से प्रेम करते हैं, उनका भी अपना घर परिवार होता है, जिसमें वह बहुत खुश रहते हैं। इस शेर-परिवार को देखकर हम बहुत आनन्दित हुए।

थोड़ा और आगे बढ़ने पर हमने पिंजरों में बन्द बन्दर और लंगूर देखें। लंगूर अपने पिंजरों में खूब उछल-कूद मचा रहे थे। हमने बन्दरों को चने डालें, जो हम घर से इनके लिए ले गए थे। बन्दर नकल करने वाला जानवर है। हमने अपने रुमाल उनकी तरफ फेंके जो उन्होंने पकड़ लिए और फिर उन्हीं रुमालों को उन्होंने हमारी ओर फेंका। यह मनुष्य की तरह समझदार होते हैं।

आगे जाने पर हमने मोर-मोरनियां देखें। मोर बड़े-बड़े आकार वाले थे। वह उड़ कर एक से दूसरी जगह जा रहे थे। उनके पंख रंग-बिरंगे थे जो उनकी सुन्दरता को बढ़ा रहे थे। मोरनियां भी उनके साथ-साथ चल रही थीं। मोर के सिर पर कलगी थी। जिससे वह बहुत आकर्षक लग रहे थे। मोर के पैर बड़े बदसूरत होते हैं। मोर अपने पैरों को देख बहुत रोता है। मोर कुछ दूरी तक उड़ सकता है पर मोरनी नहीं उड़ सकती। मोर नृत्य कर रहे थे जिससे वहां का वातावरण बड़ा मोहक बन गया था।

एक पिंजरे में हमने शतुर्मुर्ग भी देखा। इसकी गर्दन लम्बी होती है। इसका शरीर अजीब प्रकार का था। यह अपने पिंजरे में शान्त बैठा हुआ था। आगे जाकर हमने पानी में तैरती बतखें देखीं। सफेद रंग की बतखें पानी में तैरती बोलती भी जा रही थीं। इनकी चोंच लम्बी और पीले रंग की थी। हम कुछ और आगे गए तो हमने तोते, चिड़ियां और खरगोश देखे। थोड़े आगे गए तो हमने उल्लू, सफेद कबूतर तथा बगुले देखे। उनके साथ वाले पिंजरे में कोयल मधुर गीत गा रही थी। वहीं पास एक बुलबुल भी बैठी गा रही थी।

उसके बाद हमने मगरमच्छ भी देखे जिनकी आंखों से आंसू बह रहे थे। हमें एक आदमी ने बताया कि यहां एक नया कमरा बनाया गया है जहां विभिन्न प्रकार के सांपों को रखा गया है। हम वह कमरा देखने गए। वहां विषैले, विषहीन, पानी वाले, बिना पानी कई सांप रखे गए थे। वहां कई उड़ने वाले सांप भी थे। बाहर आकर हमने एक 100 साल का बूढ़ा कछुआ देखा। उसने अपने मुंह को ऐसे ढका हुआ था मानों पत्थर का कोई बड़ा टुकड़ा हो। इतना सब कुछ देखकर हम थक से गए।

तब हमने बाहर आकर चाय पी तथा नूडलज़ खाई । हमें सचमुच बहुत मज़ा आया । मेरी तो जैसे बहुत बड़ी इच्छा पूरी हो गई। मैंने घर आकर सबको चिड़ियाघर में देखे विचित्र जानवरों के बारे में बताया । सब बहुत उत्साहित हुए ।

चिड़ियाघर की सैर जीवन का एक मीठा अनुभव है। यह मेरे जीवन का हिस्सा है, इसे मैं कभी नहीं भूल सकता ।